आज का विद्यार्थी

AMRITKUMAR, II B.Com.

यह विद्यार्थियों का संसार,
समझते हैं स्वयं धीर वीर,
कुछ भी करने को तैयार,
कमी नहीं मानेंगे हार ।

फिल्मी संसार का अनुकरण,
आँखों में कूलिंग ग्लास,
सिर पर आधुनिक हेरस्टैल,
लड़कियों को लुभाने का एक स्टैल ।

आया कोई फिल्म शहर में
दोस्तों सहित थियेटर में
क्लास में भी आते हैं कभी
पर सपनों में समय गुजरता है ।

करते हैं सदा तलाश यही
स्ट्रैक के लिए कारण मिले
बिना स्ट्रैक के ज़िन्दगी बोर
स्ट्रैक करना हमारा अधिकार ।

नयी नयी आदतें पड गयीं
शराब, सिगरेट हो गये पुराने
एल. एज़डी, मरजुआना
गंजा सब सर्वसाधारण ।

दुनिया विद्यार्थियों की
बहुत बदल गयी है
अलावा पढाई के
होता है जब कुछ वहाँ ।

हमारे पडोसी ग्रह

P. SASIKUMAR, III B.A. Economics

भूमि के पडोसी ग्रह शुक्र तथा मंगल कई बातों में भूमि से मिलते-जुलते हैं । शुक्र के बारे में अभी तक हमें ठोस जानकारी प्राप्त नहीं हुई है । मंगल के बारे में थोडा बहुत मालूम हुआ है । वैज्ञानिकों का मत है कि मंगल पर क्षुद्र कोटि के जीव हो सकते हैं । हमारे नज़दीक के इन ग्रहों पर किसी प्रकार का जीव-जगत्-है तो बिना विलंब जानकारी मिल जाएगी । लेकिन इतना तो निश्चित है कि इन ग्रहों पर हमारी पृथ्वी का जैसा जीवन नहीं है ।

भूमि सौरमण्डल का तीसरा ग्रह है । इस पर लाखों तरह के प्राणि रहते हैं । हम जानते हैं कि सैकडों साल पहले इस धरती पर प्राथमिक किस्म के जीवों ने जन्म लिया था । धीरे धीरे इन्हीं का विकास होकर आज के प्राणि अस्तित्व में आये । मनुष्य इन में एक है।

हम जानते हैं कि पृथ्वी में जीवन के अस्तित्व के लिए आक्सीजन जरूरी है, वायुमण्डल जरूरी है । एक निश्चित तापमान में ही जीव रह सकते हैं । बहुत अधिक या बहुत कम ताप में जीवन की उत्पत्ति तथा विकास नहीं हो सकता । सूर्य के सबसे नज़दीक के बुध ग्रह को लीजिए । बुध पर पानी और वायुमण्डल नहीं है । इसलिए उस ग्रह में जीव नहीं होते ।

आज चन्द्रमा पर मनुष्य पहुँच चुका है । चन्द्रमा पर पानी नहीं, वायुमण्डल नहीं । अब तक के अनुसन्धानों के अनुसार चन्द्रमा पर किसी प्रकार के जीवन के अस्तित्व के प्रमाण नहीं मिले हैं । वास्तव में सौरमण्डल के किसी भी अन्य ग्रह पर किसी प्रकार के जीवन के अस्तित्व के अभी ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं ।

वैज्ञानिकों का मत है कि सूर्यमण्डल की तरह अनेक तारों के भी मण्डल होंगे और उनमें हमारी पृथ्वी जैसे करोडों ग्रह हो सकते है । उन ग्रहों पर अनुकूल परिस्थितियों में जीवन का प्रादुर्भाव एवं विकास संभव है ।

सब बातों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इस में सिर्फ हम ही हम नहीं है । इस ब्रह्माण्ड में और भी असंख्य ग्रह हैं जिनमें हम से भी अधिक अच्छे जीव हो सकते हैं ।

नवोदय

. PRABHAKARAN, II B.Sc., Chemistry

रोओ, रोओ
गला फाट कर रोओ
कण्ठों से रोष बहाकर रोओ ।

गीली आँखों के आश्वास के लिए
कठिनाइयाँ मिटाने के लिए
मानवता को जगाने के लिए
रोओ, रोओ
आँखों से अग बरसा कर रोओ ।
कौन है यहाँ नीति का कसाई ?
करता है यहाँ सत्य का रुधिरपान ?
सुन्दर सपने किसने झंझोडे ?
किये ये सब अत्याचार ?

हे राम ! क्या खोते हो अब भी
रोओ साथियो रोओ,
तुम्हारी आँखों की आग में
जल जाए भगवान,
जल जाएँ अत्याचारी सब,
गिर पडें उन्नत सिंहासन ।

सब जल कर भस्म हो जाएँ
उस भस्म से फिर से
हो जाए नवारंभ, नवनिर्माण ।

विश्वशान्ति

L. P. MGHAMMED RAFIEK, II B.Com.

आज विश्व में अशान्ति, संघर्ष और लडाई फैलने लगी है। प्रत्येक देश अपने उत्कर्ष और विकास के लिए प्रयत्नशील है। इस प्रयत्न में कभी कभी कुछ देश पडोसी देशों पर आक्रमण भी कर बैठते हैं। विश्व में कुछ ऐसे विकसित और संपन्न राष्ट्र हैं जो अपना अधीशत्व स्थापित करने के लिए छोटे छोटे देशों को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। इस संघर्षमय वातावरण से कैसे बच सकता है? यह समस्या विश्व के भारत जैसे राष्ट्रों के सामने है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यू. एन. ओ. की स्थापना हुई जो विश्व में शान्ति बनाए रखने के लिए बडी कोशिश करता है। यद्यपि यू. एन. ओ. की सहायता से अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष दूर हुए, संसार युद्ध के कारण से कई बार बच गये, परन्तु यह दावा नहीं किया जा सकता कि यह संघ विश्व शान्ति स्थापित करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। क्योंकि यू. एन. ओ. अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटन और फ्रान्स के हाथ की कठपुतली है जो इन प्रबल देशों के इशारे पर नाचता है। इन राष्ट्रों में किसी एक की भी इच्छा के विरुद्ध यू. एन. ओ. कोई कदम नहीं बढा सकता। क्योंकि इनके पास 'वीटो पवर' है जिसका उपयोग अपने स्वार्थलाभ के लिए वे राष्ट्र करते है। कोई भी आदर्श अथवा सिद्धान्त ऐसा करने से उनको रोकता नहीं। चीन-वियट्नाय संघर्ष, अरब-इस्रैल संघर्ष, अफगान संघर्ष आदि ऐसे अवसर हैं जिन पर यू. एन. ओ. की निष्क्रियता व्यक्त हुई है। पश्चिमी एशिया संघर्ष और ईरान के शा की समस्या आदि भी इस संदर्भ में स्मरणीय है।

इन सभी मामलों में किसी न किसी प्रबल राष्ट्र का हाथ है। यू. एन. ओ. किसी प्रबल राष्ट्र का अहित नहीं कर सकता। परिणाम यह होता है कि वीयटनाम, ईरान, ईजिप्त, अफगानिस्तान आदि देश बडे संकट में है।

इस हालत में कोई परिवर्तन लाना और यू. एन. ओ. को अधिक कार्यक्षम बनाना है तो सब से पहले बडे राष्ट्रों के उपर्युक्त 'वीटो पवर' को निकाल देना चाहिए। समत्व, साहोदर्य और स्वातन्त्र्य को मानने वाला एक संगठन बनाकर उसमें विश्व के सभी छोटे-बडे राष्ट्रों को अंग बनाना है। प्रत्येक राष्ट्र कीसेना को उस संगठन में समर्पित करना है। विश्व के किसी भी कोने में यदि कोई संघर्ष या फूट हो जाए तो उस संघ की सेना वहाँ पहुँचेगी और जल्दी शान्ति स्थापित करेगी।

यह एक सपना है। अगर यह सपना सच बन आए तो विश्व शान्ति एक सुन्दर यथार्थ्य बन जाएगा।